भूमिका

'अस्मिता' का सामान्य अर्थ है अपने आप की पहचान | 'अस्मिता' का संबंध पहचान से है| अपने 'स्व' की पहचान | अस्मिता को लेकर प्राय: वाद - विवाद चलते रहते हैं, जिसके आधार पर आज उपेक्षित नस्ले एवं वर्ग विमर्श के द्वारा अपनी खोई हुई पहचान को प्राप्त करना चाहते हैं | अस्मिता विमर्श उन वंचितों को उनकी पहचान दिलवाने का वह आंदोलन है, जो इस उपेक्षित वर्ग को समाज के मुख्यधारा के लोगों के साथ चलने के लिए सक्षम बनाएगा | अस्मिता विमर्श उनके उभरते अस्तित्व का अहसास करवाएगा और सत्ता और प्रशासन को भी उसके कर्तव्य की याद दिलाएगा ताकि समाज में प्रत्येक व्यक्ति बिना भेदभाव के उन्नति कर सके | स्वत्व का बोध होना स्त्री मुक्ति की पहली सीढ़ी है क्योंकि स्वत्व का बोध होने पर ही स्वत्व की रक्षा का सवाल खड़ा होता है |

यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था ऐसी है, जो गोहत्या पर दंगे कर देती है, लेकिन भ्रूण हत्या व वधू हत्या पर चूँ नहीं करती | मनु की अमानवीय व्यवस्था दलित और स्त्री पर क्यों कायम होनी चाहिए ? अस्मिता के प्रश्न इसके इर्द-गिर्द ही घूमते हैं | यही संकट दलित और स्त्री के संघर्ष को तीव्र से तीव्रतर करता है| स्त्री विमर्श के स्त्री - पुरुष सन्दर्भ में दलित पुरुष भी पुंसवादी व्यवस्था के शिकंजे से बाहर नहीं है | जिस पुरुष ने दलित जीवन का अपमान झेला है, वह क्या लैंगिक सन्दर्भों में स्त्री पुरुष के पदानुक्रम को निरस्त कर पाया है ? स्त्रीवाद को इस प्रश्न से लोहा लेना है और अधिक मानवीय समाज की संकल्पना में अस्मिताओं की टकराहट की बीच मानवीयता का वरण करना है|

दलित चेतना अस्मितामूलक कविता को एक अलग और विशिष्ट आयाम देती है | यह चेतना कविता और कवियों में डॉ० अम्बेडकर के जीवन दर्शन और जीवन संघर्ष से मिली है | अस्मिता एक मानसिक प्रक्रिया है, जो इर्द-गिर्द फैले सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक छद्मों से सावधान करती है | यह चेतना संघर्षरत दलित जीवन के उस अंधेरे से बाहर आने की चेतना है, जो हजारों साल से दलित को मनुष्य होने से दूर करते रहने में ही अपनी श्रेष्ठता मानता रहा है | इसीलिए एक दलित कवि की चेतना और एक तथाकथित उच्चवर्णीय कवि की चेतना में गहरा अंतर दिखाई देता है | सामाजिक जीवन में घटित होने वाली प्रत्येक घटना से मनुष्य प्रभावित होता है | वहीं से उसके संस्कार जन्म लेते हैं और उसकी वैचारिकता, दार्शनिकता, सामाजिकता, साहित्यिक समझ प्रभावित होती हैं | कोई भी व्यक्ति अपने परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता | इसीलिए कवि की चेतना सामाजिक चेतना का ही प्रतिबिम्ब बन कर उभरती है | जो उसकी कविताओं में मूर्त रूप में प्रकट होती है | इसीलिए दलित जीवन पर लिखी गयी रचनाएं जब एक दलित लिखता है या और एक गैर दलित लिखता है तो दोनों की सामाजिक चेतना की भिन्नता साफ - साफ दिखाई देती है | यह जरूरी हो जाता है कि अस्मिता विमर्श की कविता को पढते

समय दलित एवं स्त्री जीवन की उन विसंगतियों, प्रताड़नाओं, भेदभाव, असमानताओं को ध्यान में रखा जाए, तभी ऐसी कविता के साथ साधारणीकरण की स्थिति उत्पन्न होगी |

हिंदी कवयित्री सुशीला टाकभौरे और बांग्ला कवयित्री कल्याणी ठाकुर दलित– स्त्री अस्मिता और संघर्ष की कवयित्री हैं | इनकी कविताओं में एक साथ दलित और स्त्री के प्रश्न गुंथे रहते हैं | दलित स्त्री के शोषण का बड़ा कारण यह भी है कि अपनी सत्ता या ताकत का आभास देने के लिए सवर्ण जातियों के पुरुष इन स्त्रियों को हथियार बनाते हैं | दलित स्त्रियों का दैहिक शोषण तो आम बात है और घरेलू हिंसा और पारिवारिक दमन की स्थितियाँ दलित स्त्रियों के लिए अस्मिता व अस्तित्व का संकट बन जाती हैं | दलित स्त्रीवाद के वैचारिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष में सामाजिक और आर्थिक सवालों का बड़ा क्रम है, क्योंकि दलित स्त्री के उत्पीड़न का पहला कारण उसका दलित होना के कारण ही है | दलित स्त्रीवाद की कुछ ऐसी बातें हैं, जो उसे अन्य स्त्रीवाद से बिल्कुल अलग करती है; मसलन दलित स्त्रीवाद में परिवार के ढांचे इतने क्रूर तरीके से ध्वस्त करने की बात नहीं की जाती, जितनी कि सवर्ण स्त्रीवाद में | क्योंकि भारत में जाति आधारित व्यवस्था में दलित स्त्री व पुरुष दोनों प्रताड़ित है, यह जरूर है कि दलित स्त्री ज्यादा प्रताड़ित है | समाज में हर औरत एक तरह से दलित है | जिसके कारण स्त्री समाज में दोयम दर्जे की नागरिक मानी जाती है | समाज में कोई भी स्त्री चाहे वह किसी भी धर्म या जाति की क्यों न हो, वह किसी न किसी रूप में पितृसत्ता को झेलती ही है, किन्तु दलित स्त्रियाँ परिवारिक ढांचे में घरेलूहिंसा जरूर झेलती हैं और दलित होने के कारण उसके साथ सामाजिक हिंसा उससे कहीं ज्यादा होती है | परिवार का ढांचा उसे स्त्री होने के कारण माकूल सुरक्षा नहीं देता क्योंकि दलित परिवारों में भी पितृसत्ता की जड़ें गहरी जमी हुई हैं, लेकिन इन सब के बावजूद परिवार के बाहर वह बिल्कुल असुरक्षित है | सवर्ण स्त्रियों की अपेक्षा दलित स्त्रियाँ दोहरा ही नहीं, बल्कि तिहरे शोषण की शिकार है | आज दलित स्त्रीवाद अपनी लड़ाई संवैधानिक तरीके से लड़ने में विश्वास रखता है और अन्त में दलित स्त्रीवाद पुरुषों से अलग रहकर कोई नयी दुनिया बनाने के यूटोपिया में नहीं जीता | दलित स्त्रीवाद एक ऐसे समाज की ओर अग्रसर है, जहां 'स्वाभिमान', 'सम्मान' और 'बराबरी' के साथ स्त्री अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके | इसी परिप्रेक्ष्य में सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताओं ने दलित स्त्रियों के लिए समाज में एक मशाल जलाने का काम किया या यूं कहें कि वे अपने समय और समाज को चुनौती देने वाली दोनों महत्वपूर्ण कवयित्री हैं | इन दोनों कवयित्रियों के विमर्श को दलित स्त्रीवाद का विमर्श कह सकते हैं |

सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताएँ नयी संभावनाओं की खोज है | अस्मिता के प्रश्न की जो बेबाक अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में है, वह अद्भुत है | सुशीला टाकभौरे की कविता में दलित स्त्री के

मानवीय मूल्यों का इतिहास बोध, अपने अस्तित्व, अस्मिता को लेकर सजगता आदि को देखा जा सकता है |उनकी कविता दलित और स्त्री अस्मिता की खोज एवं शोषण के विविध रूपों से उद्घाटित है और उनके खिलाफ हो रहे अन्याय के प्रतिरोध का साहित्य है |कल्याणी ठाकुर की कविता में दलित स्त्री संवेदना पीड़ित और स्वतंत्रता की तलाश में व्याकुल है | उनकी कविता स्त्री एवं दलित अस्मिता की रक्षा तथा समाज में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करने पर बल देती है | कल्याणी ठाकुर की कविताओं पर अभी तक हिंदी कुछ नहीं लिखा गया है और न ही सुशीला टाकभौरे की क्रन्तिकारी कविताओं का मूल्यांकन हो सका है, यही कारण है कि मैंने इस विषय का चयन अपने लघु शोध प्रबंध के लिए किया |

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय है **'सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताओं में अस्मिता के प्रश्न' |** अस्मिता के तत्व यहाँ पृष्ठभूमि का कार्य कर रहे हैं | मुख्य है सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताओं का उन तत्वों के आधार पर किया गया अध्ययन | पहला अध्याय है **'सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर : व्यक्तित्व एवं लेखन',** जिसके अंतर्गत दोनों कवयित्रियों के सामाजिक – सांस्कृतिक – साहित्यिक परिवेश एवं उनके जीवन दर्शन का विवेचन- विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि उनका सरोकार समाजधर्मी था | सामाजिक सरोकार का विकास अस्मितामूलक चिंतन के रूप में हुआ है | इस अध्याय में सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर के साहित्य के जीवन व अस्तित्व, संघर्ष को जाना और समझा गया है |

दूसरे अध्याय का शीर्षक **'साहित्य का अस्मितावादी संदर्भ'** है | इसके अंतर्गत अस्मिता की अवधारणा, विशेषता तथा उसके साथ साहित्य का संबंध और उसकी सौंदर्यानुभूति पर विचार किया गया है | अस्मिता की अवधारणा आधुनिकता के साथ आने वाली वह अवधारणा है, जिसका अर्थ है स्व की पहचान, अपने होने का बोध | भूमंडलीकरण के दौर में आधुनिक युगबोध व चेतना के साथ 'अस्मिता विमर्श' सदियों से सत्ता अर्थात ज्ञान - सत्ता व भौतिक - सत्ता से वंचित समुदायों के संघर्ष आंदोलन व चिंतन-दर्शन के तौर पर उभरा है | इसमें मुख्य रूप से दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और आदिवासी विमर्श है | सिद्धों, नाथों तथा कबीर से होते हुए आज विमर्श समकालीनता तक पहुँचा है | अस्मितामूलक कविता में आक्रोश, संघर्ष, नकार, विद्रोह की भावना तीव्र है, लेकिन जीवन में घृणा की जगह प्रेम, समता, बन्धुता, मानवीय मूल्यों का संचार करना ही अस्मितामूलक कविता का लक्ष्य है |

तीसरे अध्याय **'सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताओं में अस्मिता के प्रश्न'** के अंतर्गत दोनों कवयित्रियों के सन्दर्भ में यह बताया गया है कि अस्मिता हाशिये के लोगों के लिए मूल चीज है| साहित्य में जब से सबाल्टर्न समूह अस्मिता की संवेदना को समाहित किया गया, तब से साहित्य का एक नया तेवर उभर कर आता है | सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर की कविताओं में अस्मिता के तेवर की पहचान इस अध्याय में की गयी है | इन दोनों कवयित्रियों की कविताओं में मौजूद प्रश्न मनुवादी समाज और संस्कृति को कटघरे में खड़ा करता है | उनकी कविताओं के काव्यवस्तु के सृजन में युगीन यथार्थ और मूल्यबोध की अहम भूमिका है| उन्होंने युगीन यथार्थ को यथावत चित्रित किया है| यह यथार्थ अत्यन्त व्यापक और गहरा है |

चौथे अध्याय **'शिल्पगत वैशिष्ट्य'** में यह स्थापित किया गया है कि सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर के लिए भाषा- शिल्प का मुद्दा सामाजिक सरोकार से जुड़ा है | उनकी भाषा में दलित और स्त्री जीवन- चेतना की प्रतिबद्धता दिखाई पड़ती है | उनके पास अपनी स्त्री भाषा है | इनकी भाषा में अस्मिता, स्वानुभूति और संघर्ष की चेतना का विकास लक्षित किया जा सकता है | **'उपसंहार'**, अस्मिता विमर्श के परिप्रेक्ष्य में सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर के काव्य के अध्ययन से उपलब्ध निष्कर्षों के निरूपण से संबंधित है |

इस लघु शोध प्रबंध के पूर्ण होने के लिए मैं अत्यंत विनम्रता के साथ अपने शोध निर्देशक **डॉ० सुनील कुमार** के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ | सर ने मुझे शोध करने के लिए विषय चयन से लेकर निरंतर मेरे शोध अध्यायों का संशोधन किया और जरूरी सुझाव एवं निर्देश भी देते रहे| मैं कोलकाता केंद्र के प्रभारी प्रोफेसर कृपाशंकर चौबे का भी आभारी हूँ, जो हमेशा मुझे शोध कार्य पूरा करने के लिए उत्साहवर्धन करते रहे | अपने सहपाठी मयंक, काजल, मदालसा एवं अन्य मित्रों का भी आभारी हूँ, जिनसे विषय पर बातचीत होती रही और मेरा शोधकार्य सरल हुआ | मैं सुशीला टाकभौरे और कल्याणी ठाकुर जी का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरा सहयोग किया | अपने विश्वविद्यालय के कर्मी बिजेन्द्र सिंह, रीता जी और सुखेन जी का भी विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहूँगा | इस लघु शोध प्रबंध के गठन और रूपायन में उन सहयोगियों के प्रति प्रमुख रूप से आभारी हूँ, जिन लोगों ने प्रबंध पूरी होने तक की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मुझे सहयोग दिया |

दिनांक : 23-01-2018

स्थान: कोलकाता **मनोज प्रसाद रजक**